अपनी 'जमीर'।
उसके पैरों में
बंधी होती है
दासता की जंजीर!!

## तीन

धर्म की कोख में
पलता है बच्चा
धर्म की
आग में
झुलसता है बच्चा!!
बच्चों के हाथों
सुरक्षित रहता है
धर्म?!!

संपर्क: पोस्ट बाक्स न0 205
करविगहिया पटना 800001

## ताजमहल से एक प्रश्न

❑ डॉ0 सत्य पाल श्रीवत्स

ताज!
तू किसका स्मारक है ?
मुमताज का ?
नहीं।
शाहजहां का?
नहीं।
मुमताज के रूप लावण्य का?
नहीं ।
मत ढोंग कर,
तू इनमें से किसी का भी स्मारक नहीं है।
तू स्मारक है
शाहजहां के स्वार्थ और भोग लिप्सा का।

जिसनें भ्रमर बन कर
उस अनुपम सुन्दर फूल को सतत चूसा था।
उसे नोच डाला था।
इसीलिए
वह कोमल फूल
समय से पहले ही मुर्झा गया था।
वह शाहजहां की कामग्नि से झुलस गया था।
उसके बलात्कारी प्रहारों से टूट गया था।
क्या यह प्रकृति विरूद्ध नही ?
कि किसी औरत को विवश होकर
उन्नीस वर्षों के वैवाहिक जीवन में
झेलनी पड़े चौदह प्रसव वेदनाएं
अतः यह एक तथ्य है
कि शाहजहां के विलासी रूप के आगे–
मुमताज की जिजीविषा हार मान गई थी।
वह आलौकिक सुन्दरी मरने को विवश हो गई थी।
ताकि
उस कामी के शोषण से उसका पिण्ड छूट सके।
क्या एक राजा का यही कर्त्तव्य है ?
कि वह अपनी प्रजा को केवल लूटे और भोगे।
फिर एक दिन
उसे एहसास हुआ था!
मुमताज की असहाय वेदना का!
जिस की परिणति मौत थी।
और उसकी आंखों से ?
आँसुओं की धारा स्वतः–स्वतः फूट पड़ी थी!
उसमें अवश्य प्रायश्चित का भाव रहा होगा?
जिस में असीम वेदना का स्वर था
मुमताज के वियोग की नहीं
उसके अपने पश्चाताप की
कहानी कह रहा था वह
ओ ताज।
सुन ले
उसीका तो स्मारक है तू!